एत्तो अंतोमुहुत्तं किट्टीओ करेदि। अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदाण-मसंखेज्जदिभागमोकड्डदि (प्रतिषु 'मोवट्टदि' इति पाठः।) । जीवफद्दयपदेसाणं असंखेज्जदिभागमोकड्डिज्जदि। अंतोमुहुत्तं किट्टीओ करेदि असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए। जीवपदेसे असंखेज्जगुणाए सेडीए ओकड्डदि। किट्टीदो किट्टीए गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। किट्टीओ सेडीए असंखेज्जदिभागो, अपुव्वफद्दयाणमसंखेज्जदिभागो। किट्टिकरणे णिट्ठिदे तदो से काले अपुव्वफद्दयाणमसंखेज्जदिभागो णस्सेदि (अ-का प्रत्योः 'भागो', ता प्रतौ 'भागो (णस्सदि)।' इति पाठः।)। अंतोमुहुत्तं किट्टिग(प्रतिषु 'कदं' इति पाठः।)दजोगो सुहुमकिरियं अपडिवादि (अ-का प्रत्योः 'पडिवादि' इति पाठः।) झाणं झायदि। किट्टीणं चरिमसमए असंखेज्जा भागा णस्सिंसति (अ प्रतौ 'णसति', का प्रतौ 'णंसंति' इति पाठः।) । जोगम्हि णिरुद्धम्हि आउअसमाणि कम्माणि (करेदि) । तदो अंतोमुहुत्तं सेलेसिं पडिवज्जदि, समुच्छिण्णकिरियं अणियट्टिझाणं झायदि। सेलेसिं पडिवज्जदि त्ति कम्मविप्पमुक्को सिद्धिं गच्छदि। एवं पच्छिमक्खंधे त्ति समत्तमणुओगद्दारं।

यहाँ अन्तर्मुहूर्त कृष्टियोंको करता है -- अपूर्वस्पर्धकोंकी आदि वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करता है। जीवस्पर्धकप्रदेशोंके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करता है। अन्तर्मुहूर्त काल असंख्यातगुणी हीन श्रेणिसे कृष्टियोंको करता है। जीवप्रदेशोंका असंख्यात गुणित श्रेणिसे अपकर्षण करता है। कृष्टिसे कृष्टिके गुणकारका प्रमाण पल्योपमका असंख्यातवाँ भाग है। कृष्टियाँ श्रेणिके असंख्यातवें भाग और अपूर्वस्पर्धकोंके असंख्यातवें भाग मात्र होती हैं। कृष्टिकरणके समाप्त होनेपर तदनन्तर कालमें अपूर्वस्पर्धकों (और पूर्वस्पर्धकों) के असंख्यातवें भाग का नाश करता है। अन्तर्मुहूर्त कृष्टिगतयोग होकर सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती ध्यानको ध्याता है। कृष्टियोंके अन्तिम समयमें असंख्यात बहुभाग नष्ट हो जाता है। योगके निरुद्ध हो जानेपर कर्मोंको आयुके बराबर करता है। तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें शैलेश्य भावको प्राप्त होता है व समुच्छिन्नक्रियानिवृत्ति ध्यानको ध्याता है। शैलेश्य भावको प्राप्त हुआ कि कर्मोंसे रहित होकर सिद्धिको प्राप्त होता है। इस प्रकार पश्चिमस्कन्ध अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

अप्पाबहुए त्ति जमणुयोगद्दारं एत्थ महावाचयखमासमणा संतकम्ममग्गणं (अ-का प्रत्योः 'संतकम्मं मग्गणं' इति पाठः।) करेदि। उत्तरपयडिसंतकम्मेण दंडओ। तं जहा -- सव्वत्थोवा आहारसंतकम्मिया (अ-का प्रत्योः 'सव्वत्थोवं आहार० संतकम्मिय' इति पाठः।) । सम्मत्तस्स संतकम्मिया असंखेज्जगुणा। सम्मामिच्छत्तस्स संतकम्मिया विसेसाहिया। मणुस्साउअस्स संतकम्मिया असंखेज्जगुणा। णिरयाउअस्स संतकम्मिया असंखेज्जगुणा। देवाउअस्स संतकम्मिया असंखेज्जगुणा। देवगइसंतकम्मिया असंखेज्जगुणा (अ-का प्रत्योर्नोपलभ्यते वाक्यमिदम्।)। णिरयगइसंतकम्मिया विसेसाहिया। वेउव्विय० विसेसाहिया। उच्चागोद० अणंतगुणा। मणुसगइ० विसे०। तिरिक्खाउअस्स विसे०। अणंताणुबंधिचउक्क (विसे०)। मिच्छत्त० विसे०। अट्ठकसायाणं० विसे०। थीणगिद्धितिय० तिरिक्खगइणामाए० विसे०। णवुंसयवेद० विसे०। इत्थि० विसे०। छण्णोकसाय० विसे०। पुरिस० विसे०। कोहसंजल० विसे०। माणसंज० विसे०। मायासंज० विसे०। लोभसंज० विसे०। णिद्दा-पयलाणं विसे०। पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणं तुल्ला विसेसाहिया। ओरालिय-तेजा-कम्मइय-अजसकित्ति-णीचागोदाणं विसे०। असादस्स० विसे०। साद० विसे०। जसकित्तीणं (?) विसे०। एवमोघदंडओ समत्तो।

जो अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार है यहाँ महावाचक क्षमाश्रमण (नागहस्ती) सत्कर्ममार्गणाको करते हैं। उत्तरप्रकृतिसत्कर्मदण्डककी प्ररूपणा इस प्रकार है -- आहारसत्कर्मिक सबसे स्तोक हैं। सम्यक्त्वके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। मनुष्यायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं। नारकायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं। देवायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं। देवगति नामकर्मके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं। नरकगति नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। वैक्रियिक नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। उच्चगोत्रके सत्कर्मिक अनन्तगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। तिर्यगायुके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। अनन्तानुबन्धिचतुष्कके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। मिथ्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। आठ कषायोंके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। स्त्यानगृद्धित्रिक और तिर्यग्गति नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। नपुंसकवेदके सत्कर्मिक विशेष अधिक

हैं। स्त्रीवेदके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। छह नोकषायोंके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। पुरुषवेदके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। संज्वलन क्रोधके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। संज्वलन मानके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। संज्वलन मायाके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। संज्वलन लोभके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। निद्रा और प्रचलाके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। पाँच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पाँच अन्तरायके सत्कर्मिक तुल्य व विशेष अधिक हैं। औदारिकशरीर, तैजसशरीर, कार्मणशरीर, अयशकीर्ति और नीच गोत्र के सत्कर्मिक सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। असातावेदनीयके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। सातावेदनीयके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। यशकीर्तिके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ।

मोहणीयस्स पयडिट्ठाणसंतकम्मेण सव्वत्थोवा पंचसंतकम्मिया (अ-का प्रत्योः 'पंचसम्मत्तधम्मिया', ता प्रतौ 'पंचसंतधम्मिय (पंचसंतकम्मिया)' इति पाठः।)। एक्किस्से विसेसाहिया। दोण्हं विसेसा० तिण्हं विसे०। एक्कारसण्हं विसे०। बारसण्हं विसे०। चउण्हं० तेरसण्हं संखेज्जगुणं। बावीसाए संखे० गुणं। तेवीसाए संखे० गुणं। पंचवीसाए असंखे० गुणं। एक्कवीसाए असंखे० गुणं। चउवीसाए असंखे० गुणं। अट्ठवीसाए असंखे० गुणं। छव्वीसाए अणंतगुणं। एवमोघदंडओ समत्तो।

मोहनीयके प्रकृतिस्थानसत्कर्मकी अपेक्षा पाँच प्रकृतिरूप स्थानके सत्कर्मिक सबमें स्तोक हैं। एकके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं। दोके विशेष अधिक हैं। तीनके विशेष अधिक हैं। ग्यारहके विशेष अधिक हैं। बारहके विशेष अधिक हैं। चारके विशेष अधिक हैं। तेरहके संख्यातगुणे हैं। बाईसके संख्यातगुणे हैं। तेईसके संख्यातगुणे हैं। सत्तावीसके असंख्यातगुणे हैं। इक्कीसके असंख्यातगुणे हैं। चौबीसके असंख्यातगुणे हैं। अट्ठाईसके असंख्यातगुणे हैं। छब्बीसके अनन्तगुणे हैं। इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ।

उत्तरपयडिट्ठिदिसंतकम्मेण जहण्णेण पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-सादासाद-सम्मत्त-लोहसंजलण-इत्थि (प्रतिषु 'सम्मत्त-मणुसगइणामाए इत्थि' इति पाठः।)-णवुंसयवेद-आउचउक्क-

मणुसगइ-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदी थोवा। जट्ठिदी तत्तिया (ता प्रतौ 'तत्तियाए' इति पाठः।) चेव। जत्तिया (णिद्दाणिद्दा-)पयलापयला (अ-का प्रत्योः 'जत्तिया पयलापयला', ता प्रतौ 'जत्तिया (णिद्दाणिद्दा) पयलापयला' इति पाठः।)- थीणगिद्धि-णिद्दा-पयला-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-बारसकसाय-णिरयगइ-तिरिक्खगइ-देवगइ-पंचसरीर-अजसकित्ति-णीचागोदाणं जहण्णिया ट्ठिदी तत्तिया चेव। जट्ठिदी संखेज्जगुणा। मायासंज० जह० असंखेज्जगुणा। माणसंजल० विसे०। कोहसंज० विसे०। पुरिसवेद० संखे० गुणा। छण्णोकसायाण संखे० गुणा। जट्ठिदी विसे०। एवमोघदंडओ चेव।

उत्तरप्रकृतिसत्कर्मकी अपेक्षा जघन्यसे पाँच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, साता व असाता वेदनीय, सम्यक्त्व, संज्वलन लोभ, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, चार आयु कर्म, मनुष्यगति, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पाँच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थिति स्तोक है। ज-स्थिति उतनी मात्र ही है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, निद्रा, प्रचला, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, बारह कषाय, नरकगति, तिर्यग्गति, देवगति, पाँच शरीर, अयशकीर्ति और नीचगोत्र; इनकी जघन्य स्थिति उतनी मात्र ही है। ज-स्थिति संख्यातगुणी है। संज्वलन मायाकी जघन्य स्थिति असंख्यातगुणी है। संज्वलन मानकी जघन्य स्थिति विशेष अधिक है। संज्वलन क्रोधकी जघन्य स्थितिविशेष अधिक है। पुरुषवेदकी जघन्य स्थिति संख्यातगुणी है। छह नोकषायोंकी जघन्य स्थिति संख्यातगुणी है। इन सबकी जस्थिति क्रमशः विशेष अधिक है। इस प्रकार ओघदण्डक ही है।

उत्तरपयडिअणुभागसंतकम्मेण जहण्णेण सव्वमंदाणुभागं लोहसंजलणं। माया० अणंतगुणा। माण० अणंतगुणं। कोह० अणंतगुणं। विरियंतराइय० अणंतगुणं। सम्मत्त० अणंतगुणं। चक्खु० अणंतगुणं। सुदाणुभागं (अ प्रतौ 'मंदाणुभागं', का प्रतौ 'मंदमंदाणुभागं', ता प्रतौ 'मद०' इति पाठः।) अणंतगुणं। मदिणाण० अणंतगुणं। अचक्खु० अणंतगुणं। ओहिणाण० अणंतगुणं। ओहिदंसण० अणंतगुणं। परिभोग० अणंतगुणं। (भोग० अणंतगुणं।) लाहंतराइय०

अणंतगुणं। दाणंतराइय० अणंतगुणं। विरियंतराइय० अणंतगुणं। (पुरिस० अणंतगुणं) इत्थिवेद (का प्रतौ 'परिभोगांतराइय० अणंतगुणं। लाहंतराइयं अणंतगुणं। दाणंतराइय अणंतगुणं। वीरियंतराइय० अणंतगुणं। इत्थिवेद', ता प्रतौ 'परिभोग० लाहंतराइय० वीरियंतराइय० इत्थिवेद०' इति पाठः।)० अणंतगुणं। णवुंस० अणंतगुणं। मणपज्ज० अणंतगुणं। सम्मामिच्छत्त० अणंतगुणं। केवलणाण० केवलदंसणावरण० अणंतगुणं। पयला० अणंतगुणं। णिद्दा० अणंतगुणं। हस्स० अणंतगुणं। रदि० अणंतगुणं। दुगुंछा० अणंतगुणं। भय० अणंतगुणं। सोग० अणंतगुणं। अरदि० अणंतगुणं। अणंताणुबंधिमाण० अणंतगुणं। कोह० विसे०। मायाए० विसे०। लोह० विसे०। वेउ० अणंतगुणं। तिरिक्खाउ० अणंतगुणं। तिरिक्खाणुपुव्वि० अणंतगुणं। णिरयगइ० अणंतगुणं। मणुसगइ० अणंतगुणं। देवगइ० अणंतगुणं। उच्चागोद० अणंतगुणं। असाद० अणंतगुणं। णिरयाउ० अणंतगुणं। ओरालिय० अणंतगुणं। तेज० अणंतगुणं। कम्मइय० अणंतगुणं। तिरिक्खगइ० अणंतगुणं। णीचागोद० अणंतगुणं। अजसकित्ति० अणंतगुणं। अणादेज्ज० अणंतगुणं। पयलापयला अणंतगुणं। णिद्दाणिद्दा० अणंतगुणं। थीणगिद्धि० अणंतगुणं। अपच्चक्खाणमाण० अणंतगुणं। कोह० विसे०। माया० विसे०। लोह० विसे०। मिच्छत्त० अणंतगुणं। जसकित्ति० अणंतगुणं। एवमोघदंडओ समत्तो।

उत्तरप्रकृतिसत्कर्मकी अपेक्षा जघन्यतः सबसे मन्द अनुभागवाला संज्वलन लोभ है। संज्वलन माया उससे अनन्तगुणी है। संज्वलन मान अनन्तगुणा है। संज्वलन क्रोध अनन्तगुणा है। वीर्यान्तराय अनन्तगुणा है। सम्यक्त्व प्रकृति अनन्तगुणी है। चक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है। श्रुतज्ञानावरण अनन्तगुणा है। मतिज्ञानावरण अनन्तगुणा है। अचक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है। अवधिज्ञानावरण अनन्तगुणा है। अवधिदर्शनावरण अनन्तगुणा है। परिभोगान्तराय अनन्तगुणा है। (भोगान्तराय अनन्तगुणा है।) लाभान्तराय अनन्तगुणा है। दानान्तराय अनन्तगुणा है। वीर्यान्तराय अनन्तगुणा है। पुरुषवेद अनन्तगुणा है। स्त्रीवेद अनन्तगुणा है। नपुंसकवेद अनन्तगुणा है। मनःपर्ययज्ञानावरण अनन्तगुणा है। सम्यग्मिथ्यात्व अनन्तगुणा है। केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण अनन्तगुणे हैं। प्रचला अनन्तगुणी है। निद्रा अनन्तगुणी है। हास्य अनन्तगुणा है। रति अनन्तगुणी है।

जुगुप्सा अनन्तगुणी है। भय अनन्तगुणा है। शोक अनन्तगुणा है। रति अनन्तगुणी है। अनन्तानुबन्धी मान अनन्तगुणा है। अनन्तानुबन्धी क्रोध विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धी माया विशेष अधिक है।अनन्तानुबन्धी लोभ अधिक विशेष है। वैक्रियिकशरीर अनन्तगुणा है। तिर्यगायु अनन्तगुणी है। तिर्यगानुपूर्वी अनन्तगुणी है। नरकगति अनन्तगुणी है। मनुष्यगति अनन्तगुणी है। देवगति अनन्तगुणा है। उच्चगोत्र अनन्तगुणा है। असातावेदनीय अनन्तगुणा है। नारकायु अनन्तगुणी है। औदारिकशरीर अनन्तगुणा है। तैजसशरीर अनन्तगुणा है। कार्मणशरीर अनन्तगुणा है। तिर्यग्गति अनन्तगुणा है। नीचगोत्र अनन्तगुणा है। अयशकीर्ति अनन्तगुणी है। अनादेय अनन्तगुणा है। प्रचलाप्रचला अनन्तगुणी है। निद्रानिद्रा अनन्तगुणी है। स्त्यानगृद्धि अनन्तगुणी है। अप्रत्याख्यानावरण मान अनन्तगुणा है। क्रोध विशेष अधिक है। माया विशेष अधिक है। लोभ विशेष अधिक है। मिथ्यात्व अनन्तगुणा है। यशकीर्ति अनन्तगुणी है। इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ।

उत्तरपयडिसंतकम्मेण उक्कस्सपदेसग्गेण सव्वत्थोवं अपच्चक्खाणमाणे उक्कस्सपदेसग्गं। (कोहे) विसे०। मायाए० विसे०। लोहे विसे०। पच्चक्खाणमाणे विसे०। कोहे विसे०। मायाए विसे०। लोहे विसे० (ता प्रतौ नोपलभ्यते वाक्यमिदम्।) । अणंताणुबंधिमाणे विसे०।कोहे विसे०। मायाए विसे०। लोहे विसे०। सम्मामिच्छत्ते विसे०। सम्मत्ते विसे०। मिच्छत्ते विसे०। केवलणाणावरणे विसे०। पयला० विसे०। णिद्दा० विसे०। पयलापयला० विसे०। णिद्दाणिद्दा० विसे०। थीणगिद्धि० विसे०। केवलदंसणावरण० विसे०। णिरयाउअम्मि अणंतगुणो। देवाउअम्मि तत्तियो चेव। तिरिक्खाउअम्मि विसे०। मणुस्साउअम्मि विसे०। णिरयगइ० असंखे० गुणा। आहार० असंखे० गुणा। ओरालिय० विसे०। तेज० विसे०। कम्मइय० विसे०। अजसकित्ति० संखे० गुणा। देवगइ० विसे०। हस्स० संखेज्जगुणं। रदि० विसेसाहियं। इत्थि० संखे० गुणं। सोग० विसे०। अरदि० विसे०। णवुंस० विसे०। दुगुंछ० विसे०। भय० विसे०। एवं विसेसाहिय(अ-का प्रत्योः 'भय० विसे० एवं विसंसाहिया २ एवं विसेसाहिया-', ता प्रतौ 'भय० विसे०, विसेसाहिओ, एवं विसेसाहिय-' इति पाठः।)कमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति। ओहिणाण० विसे०। मणपज्जव० विसे०। ओहिदंसण० विसे०। चक्खु० विसे०। अचक्खु० विसे०। कोहसंजल०

विसे०। माणसंज० विसे०। जसकित्ति० विसे०। णीचागोद० विसे०। उच्चागोद० विसे०। लोहसंजलण० विसेसाहियं। एवमोघदंडओ समत्तो।

उत्तरप्रकृतिसत्कर्म रूप उत्कृष्ट प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अप्रत्याख्यानावरण मानमें उत्कृष्ट प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धी मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है। सम्यक्त्वमें विशेष अधिक है। मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। नारकायुमें अनन्तगुणा है। देवायुमें उतना ही है। तिर्यगायुमें विशेष अधिक है। मनुष्यायुमें विशेष अधिक है। नरकगतिमें असंख्यातगुणा है। आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें विशेष अधिक है। तैजसशरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। देवगतिमें विशेष अधिक है। मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है। हास्यमें अनन्तगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। शोकमें विशेष अधिक है। अरतिमें विशेष अधिक है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। इस प्रकार विशेषाधिक क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये। अवधिज्ञानावरण में विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। संज्वलन मायामें विशेष अधिक है। यशकीर्तिमें विशेष अधिक है। नीचगोत्रमें विशेष अधिक है। उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है। संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है। इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ।

णिरयगदीए उक्कस्से सम्मामिच्छत्ते (प्रतिषु 'सम्मामिच्छते' इति पाठः।) पदेसग्गं थोवं। अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं। कोहे० विसे०। मायाए० विसे०। लोहे विसे०। पच्चक्खाणमाणे० विसे०। कोहे विसे०। मायाए० विसे०। लोहे विसे०। अणंताणुबंधि माणे विसे०। कोहे विसे०। मायाए विसे०। लोहे विसे०। सम्मत्ते विसे०। मिच्छत्ते विसे०। केवलणाण० विसे०। पयला० विसे०। णिद्दा० विसे०। पयलापयला० विसे०। णिद्दाणिद्दा० विसे०। थीणगिद्धि० विसे०। केवलदंसण० विसे०। अण्णदरे आउए अणंतगुणं। णिरयगई० असंखे० गुणं। आहार० असंखे० गुणं (ता प्रतौ 'अणंतगुणा' इति पाठः।) । जसकित्ति० संखे० गुणं। वेउव्विय० विसे०। ओरालिय (अ प्रतौ 'विदिय', का-म प्रत्योः 'बादिय', ता प्रतौ 'वेदिय' इति पाठः।) विसे०। तेज० विसे०। कम्मइय० विसे०। अजसकित्ति संखे० गुणं। देवगइ० विसे०। तिरिक्खगइ० विसे०। मणुसगइ० विसे०। हस्स संखेज्जगुणं। रदि० विसे०। साद० संखे० गुणं। इत्थि० संखेज्जगुणं। सोग० संखे० गुणं। अरदि (अ प्रतौ 'रदि०', का प्रतौ त्रुटितोऽत्र पाठः, ता प्रतौ '(अ) रदि०' इति पाठः।) विसे०। णवुंसय० विसे०। दुगुंछ० विसे०। भय० विसे०। पुरिस० विसे०। माणसंजल० विसे०। कोहे विसे०। मायाए विसे० लोहे विसे०। पुणो पुणो विसेसाहियं, एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइं ति। मणपज्जव० विसे०। ओहिणाण० विसे०। सुद० विसे०। मदि० विसे०। ओहिदंसण० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। सादे संखे० गुणं। उच्चागोदे० विसे०। णीचागोदे० विसे०। एवं णिरयग(अ प्रतौ 'एव णिरयाउणिरयगई', का प्रतौ 'णिरयाउणिरयगई', ता प्रतौ 'णिरयाउ०। णिरयगइ-' इति पाठः।)इदंडओ।

नरकगतिके उत्कर्षसे सम्यग्मिथ्यात्वमें स्तोक प्रदेशाग्र हैं। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धी मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। सम्यक्त्वमें विशेष अधिक है। मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है।

स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अन्यतर आयुकर्ममें अनन्तगुणा है। नरकगति नामकर्ममें असंख्यातगुणा है। आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरमें विशेष अधिक है। औदारिकशरीरमें विशेष अधिक है। तैजसशरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें विशेष अधिक है। देवगतिमें विशेष अधिक है। तिर्यग्गतिमें विशेष अधिक है। मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है। हास्यमें विशेष अधिक है। रतिमें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। शोकमें संख्यातगुणा है। अरतिमें विशेष अधिक है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें विशेष अधिक है। संज्वलनमानमें विशेष अधिक है। संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है। संज्वलन मायामें विशेष अधिक है। संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है। पुनःपुनः विशेष अधिक, इस प्रकार विशेष अधिक क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये। मनःपर्यय ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरण में विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमे विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है। नीचगोत्रमें विशेष अधिक है। इस प्रकार नरकगतिदण्डक समाप्त हुआ।

जहण्णेण पदेससंतकम्मेण सम्मत्ते (प्रतिषु 'सम्मत्त' इति पाठः।) थोवं संतकम्मं। सम्मामिच्छत्ते असंखेज्जगुणो। अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणं। कोहे० विसे। मायाए० विसे०। लोहे० विसे०। मिच्छत्ते असंखे० गुणं। अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं। कोहे० विसे०। मायाए० विसे०। लोहे० विसे०। पच्चक्खाणमाणे विसेसाहिओ। कोहे० विसे०। मायाए विसे०। लोहे० विसे०। पयलापयला० असंखे० गुणा। णिद्दाणिद्दा० विसे०। थीणगिद्धि० विसे०। केवलणाण० असंखे० गुणं। पयला० विसे०। णिद्दा० विसे०। केवलदंसण० विसे०। ओहिणाण० असंखे० गुणं (ता प्रतौ 'अणंतगुणा' इति पाठः)। ओहिदंसण० विसे०। णिरयगइ० असंखे० गुणं। देवगइ० असंखे० गुणं। वेउव्विय० संखे० गुणं। आहार० असंखेद गुणं। मणुसगइ०

संखे० गुणं। उच्चागोद० संखे० गुणं। णिरयाउअम्मि असंखे० गुणं। देवाउअम्मि विसेसाहियं। तिरिक्खाउअम्मि विसे०। मणुस्साउअम्मि विसे०। कोहसंजलण० असंखे० गुणं। माणसंजल० विसे०। पुरिस० विसे०। मायासंजल० विसे०। तिरिक्खगइ० असंखे० गुणा। इत्थि० असंखे० गुणा। णवुंस० विसे०। णीचागोद० असंखेज्जगुणं। ओरालिय० असंखे० गुणं। जसकित्ति० असंखे० गुणं। तेज० विसे०। कम्मइय० विसे०। अजसकित्ति० संखेज्जगुणं। हस्स० संखे० गुणं। रदि० विसे०। सादे संखे० गुणं। सोगे संखे० गुणं। अरदि० विसे०। दुगुंछ० विसे०। भय० विसे०। लोहसंजलण० विसेसाहियं। एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति। मणपज्जव० विसे०। सुद० विसेसाहियं। मदि० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। असादे संखेज्जगुणं। एवमोघदंडओ समत्तो।

जघन्य प्रदेश सत्कर्मकी अपेक्षा सत्कर्म सम्यक्त्वमें स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। नरकगतिमें असंख्यातगुणा है। देवगतिमें असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरमें असंख्यातगुणा है। आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है। नारकायुमें असंख्यातगुणा है। देवायुमें विशेष अधिक है। तिर्यगायुमें विशेष अधिक है। मनुष्यायुमें विशेष अधिक है। संज्वलन क्रोधमें असंख्यातगुणा है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें विशेष अधिक है। संज्वलनमायामें विशेष अधिक है। तिर्यग्गतिमें असंख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। नीचगोत्रमें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है।

तैजसशरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। शोकमें संख्यातगुणा है। अरतिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। संज्वलनलोभमें विशेष अधिक है। इस प्रकार विशेषाधिक क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये। आगे मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ।

णिरयगदीए सव्वत्थोवं सम्मत्ते जहण्णयं पदेसग्गं संतकम्मं। सम्मामिच्छत्ते असंखेज्जगुणं। अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणं। कोहे विसे०। मायाए विसे। लोहे विसे०। अचक्खु असंखे० गुणं। पयलापयला० असंखे० गुणं। णिद्दाणिद्दा० विसे०। थीणगिद्धि० विसे०। अपच्चक्खाणमाणे० असंखे० गुणं। कोहे० विसे०। मायाए० विसे०। लोहे० विसे०। पच्चक्खाणमाणे० विसे०। (कोहे० विसे०।) मायाए० विसे०। लोहे० विसे०। केवलणाण० विसे०। पयला० विसे०। णिद्दा० विसे०। केवलदंसण० विसे०। आहार० अणंतगुणं। णिरयाउअम्मि असंखे० गुणं। देवगदीए असंखे० गुणं। मणुसगई० असंखे० गुणं। तिरिक्खगई० संखे० गुणं। णिरयगई० संखे० गुणं। उच्चागोद० संखे० गुणं (अतोऽग्रे प्रतिषु 'तिरिक्खगई० असंखे० गुणं' इत्येतदधिकं वाक्यमुपलभ्यते।)। इत्थि० संखे० गुणं। णवुंस० संखे० गुणं। णीचागोद० संखे० गुणं। ओरालिय० संखे० गुणं। तेज० विसे०। कम्मइय० विसे०। अजसकित्ति० संखे (अप्रतौ 'असंखे०' इति पाठः।) गुणं। पुरिस० संखे० गुणं। हस्स० संखे० गुणं। रदि० विसे०। सादे संखे० गुणं। सोगे संखे० गुणं। अरदि० विसे०। दुगुंछ० विसे०। भय० विसे०। माणसंजलण० विसे०। कोहसंज० विसे०। मायाए विसे०। लोहसंजलण० विसे०। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतराइय० विसे०। भोगंतराइय० विसे०। परिभोगंतराइय० विसे०। विरियंतराइय० विसे०। मणपज्जव० विसे०। ओहिणाण० विसे०। सुद० विसे०। मदि० विसे०। ओहिदंसण० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। असादे० संखेज्जगुणा। एवं णिरयगइदंडओ समत्तो।

नरकगतिमें जघन्य प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्व प्रकृतिमें सबसे स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें असंख्यातगुणा है। प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। (क्रोधमें विशेष अधिक है।) मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। आहारकशरीरमें अनन्तगुणा है। नारकायुमें असंख्यातगुणा है। देवगतिमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है। तिर्यग्गतिमें संख्यातगुणा है। नरकगतिमें संख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। नपुंसकवेदमें संख्यातगुणा है। नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है। तैजसशरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। शोकमें संख्यातगुणा है। अरतिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। संज्वलनमानमें विशेष अधिक है। संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है। संज्वलन मायामें विशेष अधिक है। संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। इस प्रकार नरकगतिदण्डक समाप्त हुआ।

तिरिक्खगदीए सव्वत्थोवं सम्मत्ते जहण्णपदेससंतकम्मं। सम्मामिच्छत्ते असंखेज्जगुणं। अणंताणुबंधिमाणे असंखेज्जगुणं। कोहे० विसे०। मायाए० विसे०। लोहे० विसे०। मिच्छत्ते असं० गुणं। पयलापयला० असंखे० गुणं। णिद्दाणिद्दा० संखे० गुणं। थीणगिद्धि० विसे०। अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं। कोहे० विसे०। मायाए० विसे०। लोहे० विसे०। पच्चक्खाणमाणे० विसे०। कोहे० विसे०। मायाए विसे०। लोहे० विसे०। ओहिणाण० विसे०। केवलणाण० विसे०। पयला० विसे०। णिद्दा० विसे०। केवलदंसण० विसे०। णिरयगदीए ० अणंतगुणं। देवगदीए असंखे० गुणं। वेउव्विय० संखे० गुणं। आहार० असंखे० गुणं। मणुसगदीए संखेज्जगुणं। उच्चागोद० संखे० गुणं। तिरिक्खाउअम्मि असंखे० गुणं। मणुस्साउअम्मि असंखे० गुणं। देव-णिरयाउअम्मि असंखे० गुणं। ओरालिय० असंखे० गुणं। तिरिक्खगदीए संखे० गुणं। इत्थि० संखे० गुणं। णवुंसय० संखे० गुणं। पुरिस० विसे०। जसकित्ति० असंखे० गुणं। तेज० संखे० गुणं। कम्मइय० विसे०। अजसकित्ति० संखे० गुणं। हस्स० विसे०। रदि० विसे०। सादे० संखे० गुणं। सोगे संखे० गुणं। अरदि० विसे०। दुगुंछ० विसे०। भय० विसे०। माणसंजल० विसे०। कोहसंज० विसे०। मायासंज० विसे०। लोहसं० विसे०। दाणंतराइय० विसे०। एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति। मणपज्जव० विसे०। ओहिणाण० विसे०। सुदणा० विसे०। मदि० विसे०। ओहिदंसण० विसे०। (ता प्रतौ नास्तीदं वाक्यम्।) अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। असादे संखेज्जगुणं। एवं तिरिक्खगइदंडओ समत्तो।

तिर्यग्गतिमें जघन्य प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्वमें सबसे स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है। निद्रानिद्रामें संख्यातगुणा है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है।

केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। नरकगतिमें अनन्तगुणा है। देवगतिमें असंख्यातगुणा है। वैक्रियिक शरीरमें संख्यातगुणा है। आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है। तिर्यगायुमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यायुमें असंख्यातगुणा है। देवायु और नारकायुमें असंख्यातगुणा है। औदारिक शरीरमें असंख्यातगुणा है। तिर्यग्गतिमें संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। नपुंसकवेदमें संख्यातगुणा है। पुरुषवेदमें विशेष अधिक है। यशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। हास्यमें विशेष अधिक है। रतिमें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। शोकमें संख्यातगुणा है। अरतिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है। संज्वलन मायामें विशेष अधिक है। संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। इस प्रकार विशेषाधिक क्रमसे वीर्यान्तरायतक ले जाना चाहिये। आगे मनःपर्यय ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरण में विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। इस प्रकार तिर्यग्गतिदण्डक समाप्त हुआ।

देवगदीए जहण्णेण सम्मत्ते पदेससंतकम्मं थोवं। सम्मामिच्छत्ते पदेससंतकम्मं असंखेज्जगुणं। अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणं। कोहे विसे०। मायाए विसे०। लोहे० विसे०। मिच्छत्ते असंखे० गुणं। पयलापयला० असंखे० गुणं। णिद्दाणिद्दा० विसे०। थीणगिद्धि० विसे०। अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं। कोहे विसे०। मायाए विसे०। लोहे विसे०। पच्चक्खाणमाणे विसे०। कोहे० विसे०। मायाए विसे०। लोहे विसे०। केवलणाण० विसे०। पयला० विसे०। णिद्दा० विसे०। केवलदंसण० विसे०। आहार० अणंतगुणं। देवाउअम्मि असंखे० गुणं। तिरिक्ख-मणुस्साउअम्मि असंखे-गुणं। णिरयगदीए असंखे० गुणं। णवुंस० असंखे० गुणं। णीचागोदे० संखे० गुणं। इत्थि० असंखेज्जगुणं। देवगईए असंखे० गुणं। वेउव्विय० संखे० गुणं। मणुसगदीए असंखे० गुणं। उच्चागोदे असंखे० गुणं।

जसकित्ति० असंखे० गुणं। ओरालिय० संखे० गुणं। तेज० विसे०। कम्मइय० विसे०। अजसकित्ति० विसे०। पुरिस० संखे० गुणं। हस्स० संखे० गुणं। रदि० विसे०। सादे० संखे० गुणं। सोगे० संखे० गुणं। अरदीए० विसे०। दुगुंछ० विसे०। भय० विसे०। माणसंजलण० विसे०। कोहसंज० विसे०। मायासंज० विसे०। लोहसं० विसे०। दाणंतराइए विसेसाहियं। एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति। केवलणाण० विसे०। मणपज्ज० विसे०। ओहिणाण० विसे०। सुद० विसे०। मदि० विसे०। ओहिदंसण० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। असादे० संखे० गुणं। एवं देवगईदंडओ समत्तो।

देवगतिमें जघन्यसे प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्वमें स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें प्रदेशसत्कर्म असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। आहारकशरीरमें अनन्तगुणा है। देवायुमें असंख्यातगुणा है। तिर्यगायु और मनुष्यायुमें असंख्यातगुणा है। नरकगतिमें असंख्यातगुणा है। तिर्यग्गतिमें असंख्यातगुणा है। नपुंसकवेदमें असंख्यातगुणा है। नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है। देवगतिमें असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है। मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है। तैजस शरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। सादावेदनीयमें संख्यातगुणा है। शोकमें संख्यातगुणा है। अरतिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। संज्वलन मायामें विशेष अधिक है। संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है। संज्वलन मायामें विशेष अधिक है। संज्वलन लोभमें

विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। इस प्रकार विशेषाधिक क्रमसे वीर्यान्तरायतक ले जाना चाहिये। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। इस प्रकार देवगतिदण्डक समाप्त हुआ।

मणुसगदीए सव्वत्थोवं सम्मत्ते पदेससंतं जहण्णयं। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणं। अणंताणुबंधिमाणे असंखेज्जगुणं। कोहे० विसे०। मायाए० विसे०। लोहे० विसे०। मिच्छत्ते असंखे० गुणं। अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं। कोहे० विसे०। मायाए० विसे०। पच्चक्खाणमाणे० विसे०। कोहे० विसे०। मायाए० विसे०। लोहे० विसे०। पयलापयला० असंखे० गुणं। णिद्दाणिद्दा० विसे०। थीणगिद्धि० विसे०। केवलणाण० असंखे० गुणं। पयला० विसे०। णिद्दा० विसे०। केवलदंसण० विसे०। ओहिणाण० अणंतगुणं। ओहिदंसण० विसे०। णिरयगइ० असंखे० गुणं। वेउव्विय० संखे० गुणं। आहार० असंखे० गुणं। मणुसाउअम्मि असंखे० गुणं। तिरिक्खाउअम्मि असंखे० गुणं। कोहसंजलण० असंखे० गुणं। मायासंज० विसे०। पुरिस० विसे०। माणसंज० (ता प्रतौ 'कोहसंजलण० असंखे० गुणा। माणसं० विसे०। पुरिस० विसे०। मायासंजलण०' इति पाठः।) विसे०। णिरय-देवाउअम्मि० विसे०। तिरिक्खगईए असंखे गुणं। इत्थि० असंखे० गुणं। णवुंस० विसे०। णीचागोदे० असंखे० गुणं। मणुसगइ० असंखे० गुणं। ओरालिय० असंखे० गुणं। उच्चागोदे० असंखे० गुणं। जसकित्ति० असंखे० गुणं। तेज० संखे० गुणं। कम्मइय० विसे०। अजसकित्ति० संखे० गुणं। हस्स० संखे० गुणं। रदि० विसे०। सादे संखे० गुणं। सोगे संखे० गुणं। अरदि० विसे०। दुगुंछ० विसे०। भय० विसे०। लोहसंजल० विसे०। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतराइय० विसे०। भोगंतराइय० विसे०। परिभोगंतराइय० विसे०। विरियंतराइय० विसे०। मणपज्जय० विसे०। सुद० विसे०। मदि० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। असादे संखे० गुणं। एवं मणुसगइदंडओ समत्तो।

मनुष्यगतिमें जघन्य प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्वमें सबसे स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें अनन्तगुणा है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। नरकगतिमें असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है। आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यायुमें असंख्यातगुणा है। तिर्यगायुमें असंख्यातगुणा है। संज्वलन क्रोधमें असंख्यातगुणा है। संज्वलनमायामें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। नारकायु और देवायुमें विशेष अधिक है। तिर्यग्गतिमें असंख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। नीचगोत्रमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। शोकमें संख्यातगुणा है। अरतिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। मनःपर्यय ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। इस प्रकार मनुष्यगतिदण्डक समाप्त हुआ।

एइंदिएसु जहण्णेण सव्वत्थोवं सम्मत्ते जहण्णपदेससंतकम्मं। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणं। मिच्छत्ते असंखे० गुणं। अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणं। कोहे० विसे०। मायाए० विसे०। लोहे० विसे०। अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं। कोहे० विसे०। मायाए० विसे०। लोहे० विसे०। पच्चक्खाणमाणे० विसे०। कोहे० विसे०। मायाए० विसेसा०। लोहे० विसे०। केवलणाण० विसे०। पयला० विसे०। णिद्दा० विसे०। पयलापयला० विसे०। (ता प्रतौ नास्तीदं वाक्यम्।) णिद्दाणिद्दा० विसे०। थीणगिद्धि० विसे०। केवलदंसण० विसे०। णिरयगइ० अणंतगुणं। देवगइ० अणंतगुणं (ता प्रतौ 'असंखे० गुणा' इति पाठः।) । वेउव्विय० संखे० गुणं। आहार० असंखे० गुणं। मणुसगइ संखे० गुणं। उच्चागोदे० संखे० गुणं। मणुसाउअम्मि असंखे० गुणं। जसकित्ति० असंखे० गुणं। ओरालिय० संखे० गुणं। तेज० विसे०। कम्मइय० विसे०। तिरिक्खगई० संखे० गुणं। अजसकित्ति० विसे०। पुरिस० संखे० गुणं। इत्थि० संखे० गुणं। हस्स० संखे० गुणं। रदि० विसे०। सोग० संखे० गुणं। सादे (अस्य स्थाने अ-ता प्रत्योः 'पदेस०', का प्रतौ 'पुरिस०' इति पाठः।) विसे०। अरदि० विसे०। णवुंस० विसे०। दुगुंछ० विसे०। भय० विसे०। माणसंजल० विसे०। कोह० विसे०। माया० विसे०। लोह० विसे०। दाणंतराइए० विसे०। लाहंत० विसे०। भोगंत० विसे०। परिभोगंत० विसे०। विरियंतरा० विसे०। मणपज्जव० विसे०। ओहिणाण० विसे०। सुद० विसे०। मदि० विसे०। ओहिदंस० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। असादे संखेज्जगुणं। णीचागोदे जहण्णयं पदेससंतकम्मं विसेसाहियं। एवमेइंदियदंडओ समत्तो।

एकेन्द्रियोंमें जघ्यन्यसे जघन्य प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्वमें सबसे स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। मिथ्यात्वमें संख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष

अधिक है। नरकगतिमें अनन्तगुणा है। देवगतिमें अनन्तगुणा है। वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है। आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है। मनुष्यायुमें असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है। तैजसशरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। तिर्यग्गतिमें संख्यातगुणा है। अयशकीर्तिमें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। शोकमें संख्यातगुणा है। सातावेदनीयमें विशेष अधिक है। अरतिमें विशेष अधिक है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है। संज्वलन मायामें विशेष अधिक है। संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है।मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। नीचगोत्रमें जघन्य प्रदेशसत्कर्म विशेष अधिक है। इस प्रकार एकेन्द्रियदण्डक समाप्त हुआ।

एवं चउवीसदिमअणुयोगद्दारं समत्तं।

इस प्रकार चौबीसवाँ अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

*****